3. उत्तर का विशाल मैदान :—

यह मैदान उत्तरी पर्वतीय भाग व दक्षिण पठार के मध्य स्थित है। यह भारत का ही नहीं वरन संपूर्ण विश्व का सबसे अधिक उपजाऊ व घनी जनसंख्या वाला मैदान है। इस मैदान की उत्पत्ति हिमालय के बाद हुई है। इसका क्षेत्रफल 7 लाख वर्ग km है। यह पूर्व में 145 km व प. में 480 km चौड़ा तथा 2400 km लम्बा है। यह धनुष के आकार में फैला है तथा तल समतल है। यह समुद्र तल से 180 m. ऊँचा है। यहाँ गहराई तक कांप मिट्टी का जमाव पाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि पहले यहाँ एक विस्तृत गर्त था, हिमालय के निर्माण के बाद इससे निकली नदियों के निक्षेपण से इस मैदान का निर्माण हुआ। यह सिन्धु, गंगा, ब्रह्मपुत्र व इनकी सहायक नदियों द्वारा लाये गये कांप मिट्टी के निक्षेप से बना है। अरावली पर्वत इस मैदान को जल विभाजक के रूप में दो भागों में बाँटता है :—

(1) पश्चिमी मैदान →

इसे सिन्धु का मैदान भी कहते हैं भारत में सतलज के मैदान के नाम से जाना जाता है। इसके अन्तर्गत पाकिस्तान तथा भारत का पंजाब, हरियाणा व राजस्थान का उत्तरी व पश्चिमी भाग आता है जो सिन्धु बेसिन कहलाता है।

सतलज, व्यास व रावी नदी द्वारा निर्मित मैदान पंजाब का मैदान कहलाता है। इसका ऊँचा क्षेत्र बेट कहे जाते हैं। पंजाब के उ. प. भाग को बारी दोआब, पूर्व को बिस्त दोआब व दक्षिण को हरियाणा का मैदान कहते हैं।

(2) पूर्वी मैदान →

गंगा बेसिन का पूर्वी भाग ही वास्तव में मुख्य मैदान है। इसकी गहराई अधिक है। जहाँ गंगा व उसकी सहायक नदियाँ प्रतिवर्ष नवीन कांप मिट्टी बिछाती है। इसका क्षेत्रफल 5 लाख वर्ग km है।

Scanned with CamScanner

गंगा के मैदान को 2 भागों में बाँटा गया है!

(i) बाँगड़ (ii) खादर

(i) बाँगड़ →

यहाँ नदियों द्वारा पुरानी मिट्टी के ऊँचे मैदान बन गये हैं व जहाँ सामान्यतः बाढ़ का पानी नहीं पहुँच पाता बाँगड़ कहते हैं। बाँगड़ प्रदेश में कहीं-कहीं ऊपर की मुलायम मिट्टी हट गयी है व कंकड़ीली मिट्टी दिखाई देती है जिसे भूड़ कहते हैं। यहाँ कहीं-कहीं सिंचाई के कारण नमक की परत जम जाती है जिसे रेह या कल्लर कहते हैं।

(ii) खादर →

नीचले मैदान के कछारी भाग जहाँ प्रतिवर्ष बाढ़ का पानी पहुँचकर नयी मिट्टी की परत जमा करती है खादर कहलाता है। पंजाब में इसे बेट के नाम से जाना जाता है।

पूर्वी मैदान का पश्चिमी भाग में गंगा व यमुना नदियों के दोआब सम्मिलित हैं। हरिद्वार से अलीगढ़ तक ऊपरी दोआब, अलीगढ़ से इलाहाबाद तक मध्य दोआब है। गंगा यमुना दोआब व UP के ऊपरी मध्य भाग में रुहेलखंड का मैदान है। U.P के उत्तरी पूर्वी भाग में अवध का मैदान है।

गंगा के मध्य व नीचली घाटी में ये मैदान आते हैं !—

(a) उत्तरी बिहार का मैदान → यह गंगा का उत्तरी भाग है जिसमें घाघरा, गंडक व कोसी नदियाँ बहती हैं। यह अत्यंत उपजाऊ है।

(b) दक्षिणी बिहार का मैदान → यह गंगा नदी का दक्षिणी भाग है। यह बिहार का मध्यवर्ती भाग है जहाँ सोन, पुनपुन नदियाँ बहती हैं।

(c) उत्तरी बंगाल का मैदान → यह हिमालय की तलहटी से गंगासागर तक फैला है। यहाँ गंगा व ब्रह्मपुत्र नदियाँ बहती हैं। इसका अधिकांश भाग बांग्लादेश में आता है। उत्तरी बंगाल के पर्वतपदीय क्षेत्र को दुआर कहते हैं। बांग्लादेश तथा प. बंगाल में सुन्दरवन का डेल्टा

Scanned with CamScanner

1.8 लाख वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैला है जो विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा है। डेल्टा के ऊपरी भाग में कुछ टीले पाये जाते हैं जिन्हें चर (चार) कहा जाता है तथा निम्न भूमि को बिल (बील) कहते हैं।

(d) ब्रह्मपुत्र का मैदान → यह गंगा डेल्टा के ऊपर पूर्व में गारो, खासी व हिमालय के बीच लम्बा व सकरा पट्टीनुमा मैदान है। यहाँ जल में मिट्टी की मात्रा अधिक होने के कारण कई द्वीप बन जाते हैं। ब्रह्मपुत्र नदी स्थित माजुली द्वीप विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप है।

इसके अलावा इस विशाल मैदान में भाबर व तराई प्रदेश भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

भाबर प्रदेश →

जहाँ हिमालय व सतलज गंगा मैदान मिलते हैं वहाँ पत्थरों के छोटे-बड़े टुकड़ों का जमाव पाया जाता है जो इन पर्वतीय नदियों के प्रवाह व निक्षेपण से जमा होते हैं। इन कंकड़-पत्थरों से ढका भाग भाबर कहलाता है।

तराई प्रदेश →

भाबर प्रदेश से आगे भाबर प्रदेश में लुप्त नदियाँ पुनः प्रकट होकर बड़े भाग में दलदल का निर्माण करती है जिसे तराई प्रदेश कहा जाता है। तराई की रचना बारीक कंकड़ पत्थर रेत व चिकनी मिट्टी से हुई है।